

महाकाल का प्रतिभाओं को आमंत्रण (विद्युत चेतना का जागरण)

सामान्य जीवन से असाधारण 'परिष्कृत प्रतिभा' तक की वैज्ञानिक और आध्यात्मिक यात्रा।

अध्याय १-३ का सार: प्रतिभा का विज्ञान, निर्माण तंत्र, और दैवी अनुदान की यांत्रिकी।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

व्यक्तित्व का चुम्बकीय विज्ञान: परिष्कार ही आकर्षण है



खदान का चुम्बकीय आकर्षण:
जैसे खदान का चुंबक मिट्टी में
दबे धातु कणों को खींच लेता है...

प्रतिभाशाली व्यक्तित्व

...वैसे ही परिष्कृत व्यक्तित्व
समाज से स्नेह, सहयोग और
सान्निध्य को स्वतः
आकर्षित कर लेता है।

सुविधा, स्नेह, सहयोग

यह दैवी अनुकम्पा से पहले
'निजी पुरुषार्थ' का विज्ञान है।
मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु
और अपना मित्र है।

वसन्त पंचमी
१९९० को वन्दनीया
माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे
कहियेगा — बच्चों
से कहियेगा कि मेरे
ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन
तक पहुँचाने का
प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के
संस्थापक)

जीव-विज्ञान की तुलना: शारीरिक दुर्बलता बनाम मस्तिष्कीय विलक्षणता



पेड़ पर चढ़ने व कुलांचे भरने
में मनुष्य पीछे है।



भार वहन क्षमता और दौड़ने की गति
(खरगोश से भी कम) में पीछे है।



आकाश में उड़ने या जल में डुबकी
लगाकर श्वास लेने में असमर्थ है।



परिष्कृत प्रतिभा (विशिष्ट चतुरता) – यह वह ब्रह्मास्त्र है जो
शारीरिक दुर्बलता के बावजूद उसे सृष्टि का मुकुटमणि बनाता है।

वसन्त पंचमी
१९९० को वन्दनीया
माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे
कहियेगा — बच्चों
से कहियेगा कि मेरे
ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन
तक पहुँचाने का
प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगक्रुषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के
संस्थापक)

‘प्रतिभा’ क्या है? एक दैवी विद्युत चेतना



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहिगा मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सम्पदा और समर्थता की सर्वोच्च नियन्ता

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना
ही चाहिए और आप
सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

परिष्कृत प्रतिभा (Refined Talent) –
यह दिशा-सूचक है जो वैभव को ‘दानवीरता’
और बल को ‘रक्षार्थ’ में बदलती है। दुरुपयोग
से अपृत को विष बनने से रोकती है।

शिक्षा / शरीर बल
(Intellect/Strength) –
परिष्कार के बिना यह आतंकवाद, प्रपंच
या भ्रष्टाचार का रूप ले लेता है।

Control and Direction



प्रतिभा का गुलदस्ता: निर्माण के ४ अनिवार्य तत्त्व

आदर्शवादी
प्रयोजन
(Idealistic
Motive)

सुनियोजन
(Strategic
Planning)

सुव्यवस्था
(Systematic
Organization)

साहसभरी
पुरुषार्थ-परायणता
(Courageous
Effort)

परिष्कृत प्रतिभा
(हजार हाथियों और लाख
ऐरावतों का बल)

सत्य में बल है, पर जब सत्य के साथ प्रतिभा
जुड़ती है, तो वह 'सोने में सुगन्ध' बन जाती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप
सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे
ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

भ्रम निवारण: दुस्साहस और आतंक प्रतिभा नहीं है

आतंक / दानव प्रवृत्ति



उत्कृष्टता / देवत्व



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रांतिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रतिभा का 'जादुई स्पर्श' (ऐतिहासिक प्रमाण)

प्रतिभा
एक सजीव
शक्ति-वर्षा है जो सम्पर्क
में आने वालों को
जगमगा देती है।



गाँधी जी → जादुई प्रभाव से
साधारण जनता में स्वतंत्रता
का शौर्य-साहस फूँका।



भगवान बुद्ध → अंगुलिमाल
(दस्यु) और अम्बपाली (वेश्या) को
नरक से निकालकर लोकमंगल
में समर्पित किया।



सरदार पटेल → अपनी कड़क
(महत्वपूर्ण) वाणी से रियासतों
को झुकाया ('मेहतर की झाड़ू
तलवार से अधिक सशक्त है')।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच
में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव

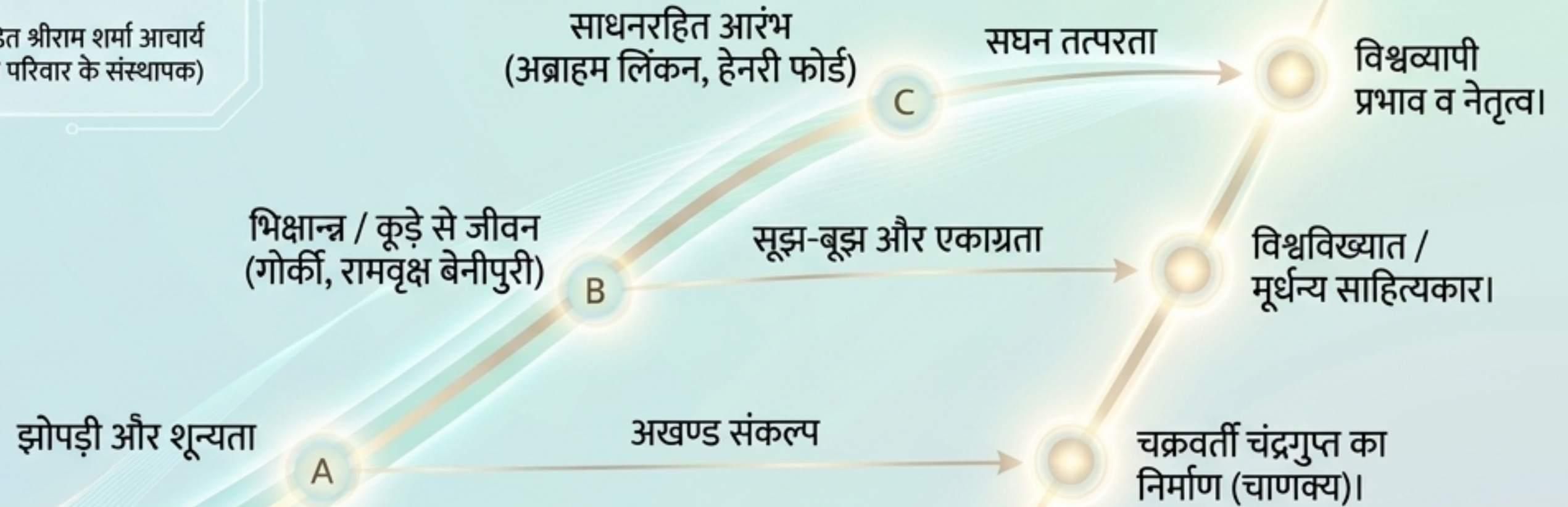
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

शून्यता से शिखर तक: साधन नहीं, 'मनोबल' मार्ग बनाता है

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



नेपोलियन का महावाक्य —
‘वह गोली अभी ढली नहीं जो मेरा सीना चीरे।
‘असम्भव’ मूर्खों के कोश का शब्द है।”

दैवी अनुग्रह का विज्ञान: 'पीछे से चलती तेज हवा' (अध्याय-३)

Context: भगवान को अपनी दुनियाँ उन्नत करने के लिए 'कुशल माली' और 'शूरवीर सैनिक' चाहिए।

'पीछे से चलती तेज हवा'
(दैवी सहायता का जुड़ना)।

व्यक्तिगत संकल्प
(ईश्वरीय कार्य का दायित्व लेना)।

लक्ष्य प्राप्ति
(कम परिश्रम में विशाल मंजिल तय होना)।

ईश्वर के काम आने वाले को अनुदान मिलते हैं,
कर्महीन भिखमंगों की तरह मांगने वालों को नहीं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में जिन्दा रहेगा। और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान को मेरे बच्चों से कहियेगा मैं जन-जन तक को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदभूषि तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

Base State: हनुमान जी
(सुग्रीव के साधारण सुरक्षा
कर्मचारी की भूमिका में)।

Hardware Upgrade

Mission Accepted: भगवान राम का कार्य
(सीता की खोज, परमार्थ का बीड़ा उठाना)।

Divine Upgrade: अतिरिक्त असाधारण शक्ति की प्राप्ति
(समुद्र लांघना, लंका दहन, पर्वत उठाना)।

Other Examples:

सुदामा → विश्वविद्यालय के लिए द्वारिकापुरी।
कुन्ती → ईश्वर के काम के लिए उत्कृष्ट देवपुत्र।

दैवी अनुदान का कठोर नियम: 'जांच-पड़ताल'

क्या इस अनुदान का उपयोग नवसृजन और लोकमंगल के लिए होगा?



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

Principle: ईश्वरीय बैंक का नियम —
‘पहले बोया जाए, फिर काटा जाए।’
पात्रता सिद्ध करने पर ही परम अनुदान मिलता है।



If NO: भस्मासुर जैसी स्थिति (विनाश की संभावना)।
अतः दैवी सत्ता बिना पात्रता के अनुदान रोक देती है।

If YES:
अर्जुन को गाण्डीव,
शिवाजी को भवानी तलवार।
व्यक्ति प्रतिभा का 'हीरे का हार' प्राप्त करता है।

यांत्रिकी का सिद्धांत: युग परिवर्तन के लिए 'विशाल क्रेन'

The Problem: समाज की सुविस्तृत, उलझन भरी समस्याएँ (पटरी से उतरा भारी इंजन)।

The Ineffective Approach: सामान्य प्रयास और दुर्बल संकल्प
(बकरियों या गधों से भारी वजन नहीं उठता)।



The Scientific Solution: मजबूत और
बड़ी क्रेन (साहसी, मेधावी और प्रखर प्रतिभावान व्यक्ति)।



Application: आड़े समय में,
उफनती नदी में डगमगाती नाव
पार करने के लिए 'बलिष्ठ
नाविकों' (परिष्कृत प्रतिभाओं)
की ही आवश्यकता होती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदयूति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आज के समय की मांग: महाप्रलय के विरुद्ध सृजनात्मक बाँध

Impending Threats:
बढ़ता प्रदूषण + बहुप्रजनन +
सञ्चित अनाचार = खण्डप्रलय
की सम्भावना।

Impending Threats: बढ़ता
प्रदूषण + बहुप्रजनन + सञ्चित अनाचार
= खण्डप्रलय की सम्भावना।

The Barrier (बाँध):
असाधारण प्रतिभावानों
का सशक्त अवरोध।

The Transformation (नहरें):
उफनती नदी के विनाशकारी जल
को रोककर खेतों तक पहुँचाने वाली
जीवनदायी नहरों का निर्माण।

Call to Action: नवयुग का अवतरण
ताजमहल, पिरामिड या चीन की दीवार
बनाने से भी बड़ा व असाधारण नियोजन है।

— वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से
ज्ञान शरीर को मेरे क्रांतिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयत्न करें।”

पुन्य मुखेश भुगलालि देवगुप्ति कागसिंह पश्चिम मीनास शर्मा आचार्य (गांधी परिवार के संरक्षक)

निष्कर्ष: संकल्प से असम्भव को सम्भव बनाएँ

Step 2:
दैवी कृपा का अवतरण
(अगस्त्य मुनि का आना और
समुद्र पी जाना)।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

Step 1: टिटहरी का अखण्ड संकल्प
(समुद्र को पाटने की ठानना और
प्राणों की बाजी लगाना)।

Step 3: प्रतिभा का प्रत्यक्ष प्रमाण
(फरहाद द्वारा पहाड़ काटकर ३२ मील
लम्बी नहर निकालना)।

Final Takeaway: जब मनुष्य अपनी श्रेष्ठता को उभारने में जुट जाता है, तो देवता भी उसे नमन करते हैं और ऋद्धि-सिद्धियाँ उसकी आज्ञानुवर्ती बन जाती हैं।